B.A. III

Paper- 6th

J. S. Mill on Utilitarianism

जॉन स्टुअर्ट मिल प्रसिद्ध उपयोगितावादी, राजनीतिशास्त्र के लेखक तथा मनोविज्ञान के विशारद जेम्स मिल का पुत्र था। उसका जन्म 20 मई 1906 को लंदन में हुआ था। जॉन स्टुअर्ट मिल को उपयोगितावादी चिंतक के रूप में प्रसिद्धि मिली हुई है। उसने बेंथम के उपयोगितावादी विचारों की समीक्षा की और उसे नवीन दिशा प्रदान की। जॉन स्टुअर्ट मिल के पिता जेम्स मिल ने उसे बचपन से ही बेन्थम के आदर्शों के अनुकूल ढालने की कोशिश की थी। जिसके परिणाम स्वरूप जे० एस० मिल एक कट्टर उपयोगितावादी विचारक बन गया। परन्तु हम देखते हैं कि मिल एक कट्टर उपयोगितावादी होते हुए भी उपयोगितावाद के मौलिक स्वरूप को कायम नहीं रख सका। इसका कारण यह था कि वह आलोचकों के आरोपों से उपयोगितावाद की रक्षा करने के हेतु समय - समय पर कुछ संशोधित विचारों का प्रतिपादन करता रहा और अन्त में इसका फल यह हुआ कि बेन्थम के पूर्व-निर्धारित उपयोगितावादी सिद्धान्तों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गये। "वेपर" ने कहा है कि " लगाये गये आरोपों से उपयोगितावाद की रक्षा करने की अपनी इच्छा में, मिल ने काफी हद तक सम्पूर्ण उपयोगितावाद को ही उलट दिया।"

बेन्थम के उपयोगितावादी विचारों में मिल के अग्रलिखित संशोधन सर्वाधिक उल्लेखनीय माने जाते हैं।

(i) मानव प्रकृति आत्म त्याग में सक्षम होती है :— बेन्थम ने मनुष्य को पूर्णतः स्वार्थी बताया था। प्रत्येक मनुष्य हमेशा अपने निजी सुखों को प्राप्त करने की करता तथा दूसरे व्यक्तियों की समरूप भावनाओं की अवहेलना करता है। सुख को प्राप्त करना दुःख को दूर भगाना मानव-प्रकृति का अन्तर्निहित गुण है। बेन्थम तथा अपने पिता के उपर्युक्त विचार के विपरीत जॉन स्टुअर्ट मिल ने इस मत की स्थापना की कि मानव प्रकृत रूप से स्वार्थ से वशीभूत नहीं होता। मनुष्य आत्मत्याग करके दूसरों के सुख का भी प्रबन्ध कर सकता है। आनन्द के लिए प्रत्यक्षतः प्रयत्नशील रहना निरर्थक साबित होता है, सुख की खोज न करके ही उसकी प्राप्ति की जा सकती है।"

Scanned with CamScanner

(ii) विभिन्न प्रकार के सुखों में गुणात्मक अन्तर होता है :— बेन्थम ने कहा था विभिन्न प्रकार के सुखों में केवल मात्रा का अन्तर हो सकता है, गुण का नहीं। गुण की दृष्टि से सभी सुख समान होते हैं। यदि दो वस्तुओं से मिलनेवाले सुखों की मात्रा समान हो तो वे वस्तुएँ समान रूप से उपयोगी होंगी। मिल ने बेन्थम के विचार में संशोधन किया। इसके अनुसार विभिन्न प्रकार के सुखों में मात्रात्मक अन्तर तो होता ही है उनमें गुणात्मक अन्तर भी होता है। कुछ सुख ऐसे होते हैं जो मात्रा में कम होने पर भी गुण में श्रेष्ठ और उत्कृष्ट होते हैं। इसलिए वे प्राप्त करने योग्य होते हैं। एक संतुष्ट सूअर से एक असंतुष्ट सुकरात होना अधिक "श्रेयस्कर है।"

(iii) सुखवादी मापदण्ड का खण्डन :— मिल के अनुसार विभिन्न-प्रकार के सुखों को सुखवादी गणना-पद्धति से नहीं मापा जा सकता है। विद्वानों के प्रमाण दो सुखों के सम्बन्ध में निर्णय के सही आधार हैं। दो सुख प्रदान करने वाली अनुभूतियों की प्रगाढ़ता उन्हीं व्यक्तियों को ज्ञात हो सकती है जिन्हें दोनों अनुभूतियों का पूरा ज्ञान हो।

(iv) मनुष्य का चरम उद्देश्य आत्मानुभूति है, सुखकी उपलब्धि मात्र नहीं :— बेन्थम के अनुसार मनुष्य का चरम उद्देश्य सुखकी प्राप्ति है। मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा सुख-प्राप्त करना चाहता है। वह हमेशा दुख से छुटकारा पाने की कोशिश करता है। इसके विपरीत मिल के मत में मनुष्य का चरम लक्ष्य आत्मानुभूति है। अपने व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाना प्रत्येक मनुष्य के जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। हमें उन्हीं कर्मों को करना चाहिए जिनसे हमारे व्यक्तित्व का विकास संभव हो सके। मिल ने अपने राजनीतिक दर्शन में अच्छे जीवन (Good life) पर जोर दिया है, जबकि बेन्थम ने मात्र सुखमय जीवन पर जोर दिया था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मिल के दर्शन में नैतिकता सुख से महान हो जाती है। क्योंकि नैतिक जीवन में ही अच्छे जीवन की कल्पना की जा सकती है।

(v) अन्तरात्मा पर जोर :— बेन्थम का उपयोगितावाद भौतिक और राजनीतिक था, अतः उसने सुख और दुख का

Scanned with CamScanner

का प्रोत बाह्य वस्तुओं को बताता। लेकिन मिल का उपयोगितावाद नैतिकता था। मिल के मत में दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करना चाहिए जैसा कि हम दूसरों द्वारा अपने प्रति चाहते हैं। अपने पड़ोसी को अपने समान ही समझना चाहिए। इन्हीं सिद्धान्तों पर उपयोगितावाद का शिक्षाचार अथवा उपयोगितावादी नैतिकता का सर्वोत्कृष्ट आदर्श टिका रहता है।

(vi) प्रेम और सहानुभूति और त्याग का योगदान :— बेन्थम ने समाज के व्यक्तियों में प्रेम, सहानुभूति और त्याग के महत्व को अस्वीकार किया था। मनुष्य अपने सुख की खोज में पूर्णतः स्वार्थी होता है, तथा उसमें जो भी नैतिक उत्तरदायित्व उत्पन्न होते हैं वे भय स्मृति और स्वार्थपूर्ण आकांक्षाओं के चलते होते हैं। इसके विपरीत मिल ने नैतिक उत्तरदायित्व को एक अच्छे और उत्कृष्ट जीवन का आवश्यक अंग माना तथा जीवन में प्रेम, सहानुभूति और त्याग के सार्वजनिक महत्व को स्वीकार किया।

(vii) स्वतन्त्रता :— मिल ने स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में बेन्थम के दृष्टिकोण में संशोधन किया है। बेन्थम के अनुसार नहीं स्वतन्त्रता स्वीकार्य और मान्य होनी चाहिए जो मानव जीवन में सुख और संतोष की वृद्धि में सहायक हो। इसके विपरीत मिल ने स्वतन्त्रता को स्वयं में एक साध्य बताते हुए उसकी अक्षुण्णता कायम की। उसने स्वतन्त्रता के जरिए मानव-मास्तिष्क और आत्मा की उन्नति पर जोर दिया न कि केवल सुख-संतोष और आनन्द की वृद्धि पर।

(ix) लोकतन्त्र के प्रति दृष्टिकोण :— मिल ने लोकतन्त्र के प्रति बेन्थम के दृष्टिकोण का खण्डन किया है। हम पाते हैं कि लोकतन्त्र की स्वीकृति दोनों ही चिन्तकों में पाई जाती है, परन्तु जहां बेन्थम के अनुसार सुख और आनन्द की खोज में दौड़ने वाले हर देश के मनुष्य केवल लोकतन्त्र में ही अपने लक्ष्य की पूर्णतम सिद्धी कर सकते हैं वहीं मिल के अनुसार लोकतन्त्र की सफलता Conditional होने के कारण हर देश में नहीं देखी जा सकती। लोकतांत्रिक गुण हर देश के मनुष्य में नहीं पाया जा सकता।

(x) राज्य के कार्य :— बेन्थम ने राज्य को कार्य करने का बहुत अधिक सीमा तक अधिकार प्रदान किया है, उसने ऐसा मानव जीवन में सुख की वृद्धि और दुख के निवारण हेतु किया है, वस्तुतः उसके अनुसार राज्य के कार्य Negative हैं। व्यक्तियों के सुख-संतोष की अभिवृद्धि के लिए

Scanned with CamScanner

राज्य उनके आचरण को नियंत्रित कर सकता है। लेकिन वह वैसे कार्यों को नहीं कर सकता जो उनके श्रेष्ठतम गुणों का विकास के नाम पर उनके स्वभाव को ही बदलने की कोशिश करें। इस प्रकार बेन्थम ने यह माना की नागरिकों का स्वाय राज्य से श्रेष्ठकर है। लेकिन मिल इसका खण्डन करता है। मिल में बेन्थम की उपेक्षा सामाजिक स्थिति के बारे में अत्याधिक गहरी पैठ थी। मिल ने यह माना है कि राज्य के कार्य Negative नहीं हो सकते है। राज्य को अपने नागरिकों के सर्वोत्तम विकास का यत्न करना चाहिए। भूमि, उद्योग, शिक्षा, प्रशासन न्याय व्यवस्था आदि सभी क्षेत्रों में राज्य के कार्य वांछनीय है। इस प्रकार मिल ने बेन्थम के राज्य के कार्य के संबंध में दिए गये विचार के विपरीत राज्य के कार्य का सकारात्मक कार्यों का स्वागत किया है।

(XI) स्वार्थों के बजाय इच्छा की सर्वोपरिता :— बेन्थम के अनुसार समाज और राज्य व्यक्तियों का एक कृत्रिम संगठन है जिससे अधिक से अधिक व्यक्तियों की अधिक से अधिक सिद्धि होती है। लेकिन मिल के अनुसार संस्थाओं और संगठनों का आस्तित्व इच्छा और विश्वास के ऊपर निर्भर है, न कि व्यक्तिक हितों और स्वार्थों के ऊपर। मिल के विचार उल्लेखनीय है "विश्वास से युक्त एक व्यक्ति वह सामाजिक शक्ति होता है जो स्वार्थ से वशीभूत निन्यानवे (ninety nine) व्यक्तियों की बराबरी करता है।

निष्कर्ष :— उपरोक्त विभिन्न चर्चाओं से स्पष्ट होता है कि मिल ने बेन्थम के उपयोगितावादी विचारों में अनेक संशोधन किए हैं। उसने उपयोगितावाद को विस्तृत और उदार बनाने का प्रयत्न किया है। "प्रो सेबाइन" ने कहा है कि मिल के विचार बेन्थम के सुखवाद को नहीं बल्कि एक सामान्य नैतिक प्रक्रिया को व्यक्त करते हैं"। परन्तु हम यह देखते है कि मिल ने अपने विचारों द्वारा उपयोगितावाद के आलोचकों को बहुत हद तक शांत किया तथापि आने वाला समय उनके नियंत्रण में नहीं ~~रह~~ रह सका। परिवर्तित और संशोधित उपयोगितावाद के विरुद्ध आरोपों की बौछार होने लगी। मिल की ख्याति जाती रही और उपयोगितावाद की व्यवहारिकता ही समाप्त हो गयी।

—— × —— × ——

Scanned with CamScanner